सम्पादकीय ...

बुद्ध सामाजिक क्रांति के शिखर पुरूष थे। उन्होंने केवल धर्म तीर्थ का ही प्रवर्तन ही नहीं किया बल्कि एक उन्नत और स्वस्थ समाज के लिए नये मूल्य मानक गढे। उन्होंने प्रगतिशील विचारों को सही दिशा ही नहीं दी बल्कि उनमें आये ठहराव को तोड़कर पूर्ण परिवर्तन का सूत्रपात किया। सामाजिक क्रांति के संदर्भ में उनका जो पराक्रम है, उसे उजागर करना वर्तमान युग की बड़ी अपेक्षा है। ऐसा करके ही हम एक स्वस्थ समाज का निर्माण कर सकेंगे। बुद्ध ने समतामूलक समाज का उपदेश दिया। जहाँ राग, द्वेष, मोह होता है, वहाँ विषमता पनपती है। इस तरह से सभी समस्याओं का उत्स राग, द्वेष, मोह है। व्यक्ति अपने स्वार्थों का पोषण करने, अहं को प्रदर्शित करने, दूसरों को नीचा दिखाने, सत्ता और सम्पत्ति हथियाने के लिए विषमता के गलियारे में भटकता रहता है।

बुद्ध ने 45 वर्षों तक निरंतर सद्धर्म की देशना की। वे उन शीर्ष महापुरूषों में से थे जिन्होंने अपने ही जीवन काल में अपने धर्म का प्रसार प्रबलता से होता तथा अपने द्वारा लगाए गए धर्म रूपी पौधे को वटवृक्ष बनकर पल्लवित होते हुए स्वयं देखा। बुद्ध ने बहुत ही सहज वाणी और सरल लोकभाषा पालि में सद्धर्म का उपदेश दिया। अपने धर्म प्रचार में उन्होंने समाज के सभी वर्गों, अमीर–गरीब, ऊँच–निम्न तथा स्त्री–पुरूष को समानता के आधार पर सम्मिलित किया।

बुद्ध ने सर्वसाधारण लोगों के मध्य आने से पहले, अपने जीवन के अनुभवों को बांटने से पहले, कठोर तप करने से पहले, स्वयं को एकाकी बनाया। तप तपा। जीवन के सत्य को जाना। उन्होंने कहा अपने मन में कुछ भी ऐसा न आने दो जिससे भीतर का संसार प्रदूषित हो। न बुरा देखो, न बुरा सुनो, न बुरा कहो। यही पूर्णता का संदेश सुख, शांति, समाधि का मार्ग है। उन्होंने 'अप्प दीपो भव' अपने दीपक स्वयं बनने का उपदेश दिया। क्योंकि हर समय संकल्पों–विकल्पों, सुख–दुःख, हर्ष–विषाद से बंधे रहना, कल की चिंता में डुबे रहना, तनाव का भार ढोना, ऐसी दशा में हमारा मन कैसे एकाकी हो सकता है? कैसे संतुलित हो सकता है? कैसे समाधिस्थ हो सकता है? इन स्थितियों को प्राप्त करने के लिए वर्तमान में

जीने के लिए अभ्यास आवश्यक है। न अतीत की स्मृति और न भविष्य की चिंता। ऐसे मनुष्यों से बना समाज समतामूलक अर्थात भेदभाव रहित हो सकता है। आवश्यक है उन्नत एवं संतुलित समाज निर्माण के लिए बुद्ध के उपदेशों के अनुरूप आचरण करने की। कोरा उपदेश तक बुद्ध धर्म को सीमित न बनाएं, बल्कि उसे जीवन का अंग बनाएं।

यह स्पष्ट है कि समतामूलक समाज का निर्माण तभी सम्भव है, जब प्रत्येक मनुष्य द्वारा बुद्ध के उपदेशों के अनुरूप आचरण किया जाए। प्रस्तुत बोधि–पथ के माध्यम से बुद्ध का अमर वाणी आप तक पहुंचाने का यह एक विनम्र प्रयास है। पत्रिका के समृद्ध सम्पादन में उन समस्त लेखकों व विद्वज्जनों का हृदय से आभार व्यक्त करते हैं जिनके लेखों एवं बहुमूल्य सुझाव द्वारा यह कार्य समीव हो सका। इससे आपके ज्ञान–भण्डारमें कुछ वृद्धि हुई तो हम अपना प्रयास सफल समझेगें।

डॉ संघमित्रा बौद्ध
(संपादिका) बोधि–पथ